लौट के बुद्धू घर को आए

सतीश अग्निहोत्री

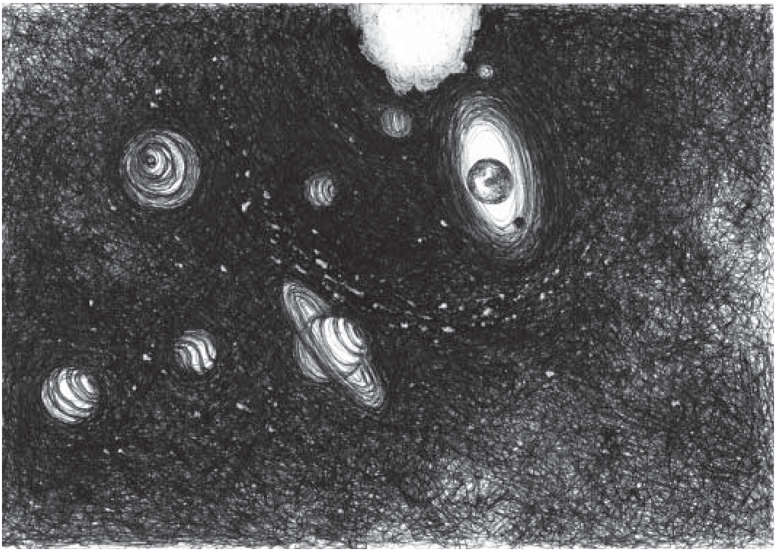

शर्माजी को जब होश आया, डॉ. मेहता उनके सामने खड़े थे। उन्होंने उठने की कोशिश की लेकिन डॉ. मेहता ने उन्हें मना कर दिया, "लेटे रहिए, लेटे रहिए, शर्माजी। आप तो लकी निकले। इतना बड़ा पेड़ आप पर गिरा, फिर भी आप बाल-बाल बच गए। एकदम प्रोटेक्टेड, मानो डाल का आकार आपके लिए ही बना हो।"

अपने पिता की प्रश्नार्थक मुद्रा देखकर धीरज ने स्पष्ट किया, "डैडी, जब आप पीछे की ओर भागे, तब अपने दशहरी आमों का पेड़ आप के ऊपर गिर पड़ा था। लेकिन उसकी एक डाल आप पर इस तरह पड़ी कि आप पूरी तरह बच गए। सिर्फ सिर पर मामूली-सी चोट आई।"

"मामूली-सी..." डॉ. मेहता ने उनके सिर पर उभरे बड़े-से गूमड़ को प्यार से सहलाया और बोले, "शर्माजी, उस पैराबोला के आकार की डाल ने तो आपको बचा लिया, पर बड़ी मुसीबत तो दिल्ली से आ रही है। अपने सिर के साथ उसे भी सम्भालो।"

"मर गए!" शर्माजी बिस्तर पर पड़े-पड़े बुदबुदाए, "अब जाँच शुरू। वैसे, मैं खुद यह समझ नहीं पा रहा हूँ कि यह सब हुआ कैसे।"

"डैडी, दो खबरें हैं – एक अच्छी और एक बुरी। अच्छी तो यह कि डॉ. माँझी ने रॉकेट का मार्ग ट्रेक करना शुरू कर दिया है और बताया है कि रॉकेट अब तक बिलकुल सही राह पर चल रहा है। गुसलखाने के प्रतिरोध से उसकी गति और स्थान में कोई फर्क नहीं पड़ा है।"

"चलो, यह तो अच्छा हुआ। वैसे भी, बटन दबने के बाद सौर-मण्डल से निकलने तक तो, वह बिना किसी मदद के ठीक अपनी राह चलेगा। खैर, बुरी खबर क्या है? क्या रॉकेट से सम्पर्क नहीं हो पा रहा है?"

"नहीं, डैडी...," धीरज कुछ हिचकिचाया, "बात दरअसल ऐसी है कि मिन्नी कहीं मिल नहीं रही है, और चौकीदार कह रहा था कि वह हमारे घर में थी जब यह घटना हुई। पर मैंने पूरा घर छान लिया – न वह यहाँ है, न अपने घर पर।" धीरज का चेहरा कुछ रुआँसा हो गया।

"मिन्नी!" शर्माजी को एक झटका-सा लगा। "पर वह तो घर चली गई थी। मैंने ही उसे भेजा था। मुझे अच्छी तरह याद है... चौधरीजी को बताया?"

"अब तक तो सिर्फ उन्हीं को बताया है। पर डैडी, चौकीदार ने बताया कि मिन्नी बाहर गेट तक आई थी, फिर अचानक उसे कुछ याद आया और वह गेट बन्द कर वापस अन्दर भाग गई।"

"अरे नहीं!" शर्माजी काँप उठे। गेट बन्द होने के बाद ही तो उन्होंने कृष्णन से बात की थी और फिर रॉकेट के अन्तरकक्ष का मुआयना करने गए थे। 'अगर वह आफत वापस आ गई थी तब तो... तब तो...' यह सोचकर ही वे सिहर गए।

थोड़ी देर में दरवाज़े पर चौधरी साहब का स्वर सुनाई दिया, "धीरज बेटे, वह पड़ोसियों के यहाँ भी नहीं है।" फिर शर्माजी को देखकर जैसे उनके सब्र का बाँध टूट गया, और वे बच्चों की तरह फफककर रो पड़े।

"इस घटना की सारी ज़िम्मेदारी मेरी है।" शर्माजी ने दृढ़ता से कहा, "इतना तो, चौधरीजी, तय है कि मिन्नी मलबे में नहीं दबी है, बल्कि उस रॉकेट के अन्तरकक्ष में है। सारे तथ्य इस बात की ओर संकेत करते हैं कि उसी ने हरा बटन दबाकर रॉकेट को चालू किया होगा। अब वह उत्सुकतावश किया था या उसने छिपकर कृष्णन से हुई मेरी बातचीत सुन ली, मैं नहीं कह सकता। मैंने उस बातचीत का रिकॉर्ड फिर दोहराकर सुना है। उसमें बटन का ज़िक्र है। वैसे मेरे खयाल में, चौधरीजी, अब सबसे अहम बात है रॉकेट से सम्पर्क बनाना। हो सके तो मिन्नी से सम्पर्क बनाना, उसे बचाने की कोशिश करना, बशर्ते वह...," उनकी आवाज़ भर आई, "मैंने

सोचा भी न था कि इन हालातों में मैं आपकी बेटी को देश की पहली सौर-मण्डल से बाहर जाने वाली अन्तरिक्ष यात्री बना बैठूँगा।"

शर्माजी के सामने बैठे थे उनके डायरेक्टर डॉ. अभ्यंकर और डॉ. जगत। दोनों ही अपने क्षेत्र के चोटी के वैज्ञानिकों में से थे। घटना का ब्यौरा सुनकर वे भी अवाक थे।

"अपनी ज़िम्मेदारी स्वीकार करने के साथ-साथ मेरी एक विनती है।" शर्माजी ने एक कागज़ डॉ. अभ्यंकर की ओर बढ़ाया। "यह मेरा अपने पद से इस्तीफा है, और इस पर तारीख नहीं लिखी। आज से, मैं कंट्रोल रूम में बैठा दिन-रात यही प्रयत्न करूँगा कि इस मिशन में से जितना कुछ उबारा जा सके, उबरे। सफलता या विफलता, दोनों में जो भी हाथ लगे, इस्तीफा आपके हाथों में है, अभ्यंकरजी। लेकिन मुझे मेरी गलती को सुधारने का एक मौका चाहिए।"

जाँच-कक्ष में बैठे हुए सभी सदस्यों की आँखें नम हो गई थीं, खासकर चौधरी साहब की। उन्हें मालूम था कि शर्माजी को मिन्नी किस हद तक दुलारी थी, और मिन्नी के जाने से उनके दिल पर क्या बीती होगी। इससे पहले कि वे कुछ कहते, डॉ. जगत उठ खड़े हुए। उन्होंने शर्माजी के कन्धों को थपथपाया और उन्हीं के सामने इस्तीफे का कागज़ फाड़कर बोले, "शर्माजी, इतने सस्ते में तुम्हें नहीं छूटने देंगे। तुमने सरकार की अनुमति लिए बिना अपनी बेटी को अन्तरिक्ष में भेजा है। उसका यही हर्ज़ाना है कि उसे ज़िन्दा वापस ले आओ। तुम्हें हुक्म दिया जाता है कि अभी-के-अभी कंट्रोल रूम का काम सम्भालो। हम सभी तुम्हारे साथ हैं।"

दीपू पर तो सारी घटना गाज बनकर गिरी। वह अपने आप को कोसने लगा – न वह मिन्नी को तंग करता, न उस पर छोटे बनने की धुन सवार होती, और न ही... वह आगे सोचना भी नहीं चाह रहा था। माँ के सामने जाने की, उनकी हालत देखने की, उसकी हिम्मत ही नहीं होती। वे कभी उससे चिपटकर रोतीं तो कभी लाल-लाल आँखों से घूरतीं, "दूर चला जा! तूने ही मेरी बच्ची को भगा दिया है इस घर से!" मगर पापा बड़े शान्त थे। तो सहारे के लिए, दीपू उनकी गोदी में दुबक जाता। बस 48 घण्टों में उसकी दुनिया क्या से क्या हो गई।

* * *

वहीं दूसरी ओर, मिन्नी की समस्याएँ कुछ और ही थीं। रॉकेट के चालू हो जाने की जानकारी उसे अजीब तरह से मालूम हुई। अन्तरकक्ष में न बाहर की थरथराहट थी, न शोर, न कुछ और। लेकिन दो घटनाएँ हुईं। एक तो मिन्नी ने महसूस किया कि वह कमरे के फर्श से कुछ और तेज़ी-से चिपक रही है। उसे पहले तो थोड़ी हैरानी हुई, पर फिर उसे खयाल आया कि बहुत ही कम समय के लिए, ऐसा ही

अनुभव ऊपर जाती तेज़ लिफ्ट में भी आता है। पर यह 'चिपकना' न सिर्फ जारी था, बल्कि बढ़ भी रहा था। यानी कि रॉकेट ऊपर जा रहा है, और वह भी अधिकाधिक गति से।

उसे ट्विन पैराडॉक्स के बारे में शर्माजी का वाक्य याद आने लगा - "...जो भाई त्वरण से गुज़रता है, उसकी उम्र घटती है..." वह सोचने लगी कि तो क्या उसकी उम्र भी घट रही होगी? लेकिन उसका पता कैसे चलेगा? उसने अपनी घड़ी की ओर देखा। पर नहीं, घड़ी के साथ सफर करने वाले को तो मालूम नहीं पड़ेगा कि घड़ी धीमी चल रही है। अब क्या करें? खैर, लौटकर तो पता चल ही जाएगा कि कितनी उम्र घटी है। पर मान लो, उस दीपू के बच्चे से फिर भी एकाध महीना बड़ी रह गई, तो? फिर सारी झंझट बेकार जाएगी। क्या किया जाए? शर्मा अंकल तो जानते ही होंगे। वह हिसाब करके रॉकेट को वापस ले ही आएँगे। "धत्!" उसके मुँह से निकला, "शर्मा अंकल ने रॉकेट को इस काम के लिए थोड़े ही भेजा है। उन्होंने अलग उद्देश्य के लिए बन्दर को ट्रेनिंग दी होगी। मेरे लिए वे अपना प्रयोग क्यों बदलेंगे? लेकिन अगर उन्हें अपने हालात बता दूँ, तो? पर कैसे?"

तब पहली बार मिन्नी ने जाना कि वह बिलकुल अकेली थी, और बन्दर को आगे क्या करना था, इसका उसे अता-पता भी न था। उसे तो यह भी मालूम नहीं था कि वह शर्मा अंकल से या शर्मा अंकल उससे सम्पर्क कैसे करेंगे।

इससे पहले कि उसे यह चिन्ता और अधिक सताती, उस कक्ष में मौजूद टेलीविज़न के आसपास चार स्क्रीन प्रकाशित हो उठीं। चारों पर कुछ नक्शे थे। अन्य नक्शे तो मिन्नी की समझ में नहीं आए, पर एक ज़रूर कुछ-कुछ समझ आया। वह सौर-मण्डल का नक्शा था जहाँ तीर के निशानों के साथ एक मार्ग बना हुआ था, और पृथ्वी के पास एक बहुत छोटा-सा हिस्सा एक लाल घेरे में था।

तीसरे टीवी की स्क्रीन पर एक लाल धब्बा बिलकुल केन्द्र में था, और निचले दाएँ कोने में अंकित पृथ्वी से इस बिन्दु तक का रास्ता बढ़ता हुआ दिख रहा था।

'ज़रूर यह लाल धब्बा रॉकेट है, और आगे-पीछे का रास्ता इस स्क्रीन पर नज़र आता है,' मिन्नी ने सोचा। उसे पृथ्वी के गोले के इर्द-गिर्द एक हलकी-सी वृत्ताकार रेखा नज़र आई, जिसे लाल धब्बा पार कर चुका था। इसका मतलब रॉकेट पृथ्वी का वायुमण्डल पार कर चुका था।

मिन्नी आज भी कभी-कभी उस घटना को याद करके सिहर जाती है। पृथ्वी कब-की पीछे छूट चुकी थी। रॉकेट मंगल को पार कर चुका था। पटल पर, मार्ग के दोनों ओर, कई

जगमगाते छोटे-मोटे धब्बे नज़र आने लगे थे। ये थे उल्कापिण्ड यानी मीटियोरॉइट्स। मिन्नी को याद आया कि धीरज भैया ने ही उसे मीटियोरॉइट्स के बारे में बताया था – "धरती पर इनकी हमेशा बौछार होती रहती है। वह तो भला हो हमारे वायुमण्डल का कि ये हम तक पहुँचने से पहले ही जल जाते हैं, वरना धरती पर एक किलो या उससे अधिक वज़न वाले उल्का-पिण्डों की 4000 पिण्ड प्रति घण्टा की दर से मार होती।"

"फिर वही दर!" मिन्नी हँसी, "भैया, त्वरण के परिवर्तन की दर को क्या कहते हैं?"

पर यहाँ धीरज भैया नहीं बल्कि मंगल और गुरु के बीच के उल्का क्षेत्र से गुज़र रहा रॉकेट था। 'अगर कोई बड़ी-सी उल्का रॉकेट से टकरा गई तो? पता नहीं बन्दर को इससे बचने की कोई ट्रेनिंग दी गई थी या नहीं।' और तभी मिन्नी को पटल पर एक उल्का-खण्ड नज़र आया जो रॉकेट की ओर ही बढ़ रहा था। उसके आकार और गति को देखकर मिन्नी को इस बात पर कोई सन्देह नहीं रहा कि वह रॉकेट से टकराएगा। वह सोच में पड़ गई, 'अब क्या होगा? धरती से सम्पर्क स्थापित करने का कोई सुराग नहीं मिल रहा और यह उल्का-खण्ड...'

पटल के ऊपरी हिस्से में, बारीक सायरन जैसी आवाज़ के साथ, एक चौड़ी पट्टी जगमगाने लगी। उसके दोनों ओर दो छोटे-छोटे लाल बिन्दु भी नज़र आए। इतना तो मिन्नी समझती थी कि यह आवाज़ खतरे की सूचक है, पर उसे पता ही नहीं था कि ऐसे में वह क्या करे। उल्का-खण्ड पास आता जा रहा था। हड़बड़ाई और चिन्तित मिन्नी सोच ही रही थी वह क्या करे कि उसे पटल की उस पट्टी पर एक बन्दर का चित्र नज़र आया, जो एक लाल चौकोर डब्बा उठाए खड़ा था। उस डब्बे से लहरें निकलकर दाईं ओर जा रही थीं जहाँ एक आदमी की छोटी-सी तस्वीर थी।

मिन्नी ने गौर-से देखा – तस्वीर कृष्णन अंकल की थी। उसने झट-से कमरे में नज़र दौड़ाई; वह लाल रंग का चौकोर डिब्बा ऊपर दीवार से लगा हुआ था। मिन्नी ने उसे हुक से अलग किया, और उसी मुद्रा में खड़ी हो गई जिस मुद्रा में बन्दर खड़ा था। फिर वह एकटक पटल की ओर देखती रही जहाँ पर रॉकेट और उल्का-खण्ड, दोनों नज़र आ रहे थे।

लगा युगों बीत गए, पर स्क्रीन पर रॉकेट के निचले हिस्से से दो छोटे धब्बे ठीक एक-जैसा कोण बनाए दाहिनी और बाईं ओर निकले हुए थे। सहसा दाहिने धब्बे ने एक जुम्बिश खाई और तेज़ रफ्तार से उल्का-खण्ड की दिशा में बढ़ चला। रॉकेट की खुद की गति भी कुछ बढ़ गई थी। दाहिना धब्बा तेज़ रफ्तार के

साथ उल्का-खण्ड से जा टकराया, पर कुछ नहीं हुआ। उल्का-खण्ड अपनी राह चलता आ रहा था लेकिन नहीं... पटल पर धीरे-धीरे उसके प्रस्तावित मार्ग को दिखाती हुई एक दानेदार रेखा उभर आई। मिन्नी ने बाद में देखा कि वह उल्का-खण्ड रॉकेट के ठीक नीचे से गुज़र गया। माथे पर चुहचुहाए पसीने को उसने पोंछा। पट्टी की जगमगाहट, लाल बिन्दु और वह बारीक सायरन की आवाज़, सब बन्द हो गए थे। पहली बार घर को याद कर मिन्नी रो पड़ी।

* * *

"आँसू तो हम सबके निकल आए थे।" धीरज भैया ने बाद में उसे बताया, "जब पहली बार तुम्हारा चेहरा कंट्रोल रूम के टीवी स्क्रीन पर दिखा, तो डैडी और तुम्हारे पापा बच्चों की तरह किलक रहे थे। पहली बार सबको यकीन हुआ कि तुम ज़िन्दा हो।"

"पर मैं तो अच्छी-खासी थी। मुझे क्या होना था!"

"अरे पागल, हमें क्या पता कि तुम बन्दर से भी चालाक हो! उसके खाने का सामान कहाँ रखा था, इसकी जानकारी तुम इतनी आसानी-से पा लोगी, यह हमने सोचा भी नहीं था।"

"आ हा, आप अगर केले की तस्वीर बनाएँ तो बन्दर क्या, गधे को भी मालूम हो जाता कि इसमें खाने की चीज़ें हैं।"

"वही तो हुआ!" दीपू से रहा नहीं

गया। मिन्नी ने हाथ में पकड़ा गिलास उठाकर उसे मारने के लिए फेंका, पर वह दीपू से कोसों दूर जा कर गिरा।

"पर पापा, वह लाल डब्बा था क्या?" मिन्नी ने पूछा।

"बेटा, वह एक प्रकार का फोटो-ट्रांसमिटर था। कृष्णन अंकल दरअसल यह अध्ययन करना चाहते थे कि संकट-संकेत मिलने पर बन्दर अपनी ट्रेनिंग के मुताबिक उसे दीवार से निकालता है या नहीं। साथ ही, उन्हें बन्दर के चेहरे के भाव भी देखने थे।"

"फिर दिखे मेरे चेहरे के भाव? पर पापा, मैं अगर डब्बा न उतारती, तो?"

"तब भी रॉकेट को कुछ नहीं होता। क्योंकि रॉकेट की नियंत्रण प्रणाली अपने आप बचाव व्यवस्था चालू कर चुकी थी। तुम्हारे डब्बा उतारने से हमें केवल तुम्हारे रॉकेट में सकुशल होने की खबर मिल गई।"

"पर पापा, वह दाहिना धब्बा जब उल्का-खण्ड से टकराया, तब कुछ हुआ क्यों नहीं?"

"अरे, वहाँ कोई बम थोड़े ही फटना था! पहले जो दो धब्बे दोनों ओर थे, वे इसलिए कि रॉकेट अपने मार्ग से दाएँ या बाएँ विचलित न हो। बाद में, दाहिना धब्बा, जो एक स्वयंचलित प्रक्षेपणास्त्र यानी मिसाइल था, इस हिसाब से उल्का से जा टकराया कि उल्का अपना रास्ता बदल दे, और रॉकेट से उसकी टक्कर न हो।"

"हाँ, मैंने भी देखा था कि हमारा रॉकेट थोड़ा तेज़ हो गया था और उल्का-खण्ड उसके ठीक नीचे से निकला था।"

"भला हो उस उल्का-खण्ड का!" शर्माजी ने कहा, "तुम्हारे सकुशल होने की खबर तो मिली, वरना तुमने तो मेरा कोर्ट-मार्शल कराने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।"

* * *

कंट्रोल रूम में भले ही सबको चैन मिला हो, पर मिन्नी इससे बेखबर थी कि उस लाल डिबिया से क्या हुआ था। उसके हिसाब से खतरा टल गया था। स्क्रीन पर मौजूद चित्र गायब हो गए, और उस डिबिया का काम खत्म। कभी-कभी वह उत्सुकतावश उस डिबिया को हाथ में लेकर उसी पुरानी मुद्रा में खड़ी हो जाती, और कंट्रोल रूम में बैठे व्यक्ति को पता चलता कि वह सकुशल है। पर जहाँ तक मिन्नी के साथ सम्पर्क का सवाल था, वह अब भी नहीं बना। अब एक ही आशा बची थी, वह थी प्लूटो को पार कर सौर-मण्डल से बाहर जाने के समय की। क्योंकि उस ही समय बन्दर को कंट्रोल रूम से सम्पर्क स्थापित कर निर्देश लेने के स्पष्ट संकेत मिलने वाले थे। इसलिए उम्मीद थी कि उन संकेतों को समझकर शायद मिन्नी भी कंट्रोल

रूम से सम्पर्क स्थापित कर ले।

“प्लूटो, यानी कोई 6 अरब किलोमीटर की दूरी...” चौधरी साहब ने खुद से कहा, “खैर, प्रकाश को उतनी दूर जाने में महज़ कुछ घण्टे लगेंगे। लेकिन हमारा रॉकेट... वो भी एक-न-एक दिन पहुँचेगा ही। पर शर्मा, तुम्हारा कार्यक्रम तो उससे भी आगे का है?”

बेचारे शर्माजी क्या कहते! उनका मूल कार्यक्रम तो सूरज के निकटस्थ तारे ‘प्रॉक्सिमा सेंटॉरी’ तक की आधी दूरी तय करना था। प्रॉक्सिमा सेंटॉरी कोई 4.2 प्रकाश वर्षों की दूरी पर था। उनका रॉकेट कोई 2 प्रकाश वर्ष यानी करीब 20000000000000 किलोमीटर तय करके ही लौटने वाला था। अब यह चौधरी साहब को कैसे बताएँ। हाँ, उन्होंने एक गुंजाइश ज़रूर रखी थी जिसमें रॉकेट सौर-मण्डल से कुछ ही दूर जाकर लौट आता। वह इसलिए कि अगर रॉकेट की ईंधन या सौर-शक्ति ग्रहण व्यवस्था में कोई खराबी आ जाती, तो वे रॉकेट को वापस ले आते। पर इसके लिए भी यह ज़रूरी था कि रॉकेट के मार्ग में आवश्यक बदलाव प्लूटो की कक्षा छोड़ने से पहले ही किया जाता। यह तभी होता जब रॉकेट में उपरोक्त खराबियों के आने पर बन्दर को कक्ष में आदेश मिलता कि वह नियंत्रण-कक्ष से सम्पर्क बनाए और मार्ग में परिवर्तन करे। अगर कोई खराबी न हो तो उसे ऐसा कोई आदेश नहीं मिलने वाला था। फिर तो उसे ठीक प्लूटो-कक्षा की सीमा के पास निर्देश मिलने थे, ताकि वह रॉकेट की यात्रा का दूसरा चरण शुरू कर सके, और सफर का नियंत्रण मूल कार्यक्रम के अनुसार होने के लिए, आवश्यक नीला बटन दबा सके।

पहली बार शर्माजी ने चाहा कि उनके रॉकेट में खराबी आ जाए। हताश होकर उन्होंने अपने आप को भाग्य के हवाले कर दिया।

मिन्नी ने भी कई बार इन दो बटनों पर गौर किया था – लाल और नीला। पर उसने उन्हें दबाने का दुस्साहस नहीं किया, खासकर लाल को लेकर तो वह ऐसा सोच भी नहीं सकी। उसे इतना तो एहसास था कि यह बटन ज़रूर आपात-परिस्थिति से सम्बन्ध रखता है। एक और वजह भी थी। इन दोनों बटनों पर ‘दो’ की संख्या लिखी हुई थी, जबकि हरे बटन पर ‘एक’ संख्या लिखी थी। मिन्नी ने यह भी नोट किया कि सौर-मण्डल के भीतर का मार्ग दिखाने वाली स्क्रीन पर एक का आँकड़ा था, जबकि उसके बाहर का मार्ग दिखाने वाली स्क्रीन पर दो का आँकड़ा था। उसने अनुमान लगाया कि ज़रूर इन बटनों का सम्बन्ध सौर-मण्डल के बाहर की यात्रा से है। उसे क्या पता था कि धरती पर कुछ वैज्ञानिक बड़ी बेबसी से चाह रहे हैं कि वह लाल बटन दबाने की गलती करे। एक बार तो

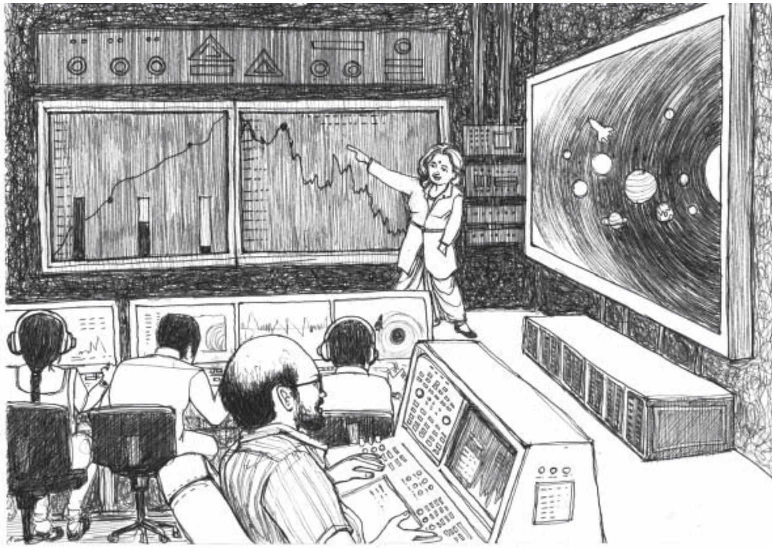

वह अपनी लाल डिबिया लिए उन बटनों के करीब गई भी थी। कंट्रोल-रूम में सभी साँस रोककर देख रहे थे कि वह करती क्या है।

शर्माजी तो उत्सुकता से चिल्ला भी उठे थे, “बेटा, लाल बटन दबा दे! लाल बटन दबा दे, प्लीज़!” पर ऐसा कोई चमत्कार नहीं हुआ।

* * *

रॉकेट के सौर-मण्डल पार करने का समय नज़दीक आता जा रहा था। सारे विक्रमनगर में उत्कण्ठा अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई थी। उसी माहौल में डॉ. जगत ने एक अति गोपनीय और महत्वपूर्ण बैठक बुलाई थी। इसमें देश-विदेश के कोई 60 वैज्ञानिक भाग ले रहे थे, डॉ. माँझी के एक प्रस्ताव पर विचार करने के लिए। हालाँकि, माँझी उम्र में छोटी थीं, पर आकाश-विज्ञान में उनकी प्रतिभा का लोहा सभी मानते थे।

“अब तक हमने दो ही बातों पर विचार किया है।” माँझी ने कहा, “पहले चरण की यात्रा, जो हरे बटन से चालू हुई और दूसरे चरण की यात्रा, जिसका मार्ग निर्धारण नीले बटन के दबाने पर शुरू होगा। इस बटन को दबाने का निर्देश बन्दर को हम तब देते, जब वह नियत समय पर टीवी स्क्रीन पर मिलने वाले चित्र-निर्देश को समझकर, हमसे सम्पर्क स्थापित करता। अब यह काम मिन्नी को करना है कि वह संकेत भेजने वाली डिब्बी को चौथे टीवी में, सही

जगह फिट कर पाए; लेकिन शायद तब तक रॉकेट प्लूटो की कक्षा पार कर चुका होगा।"

"यानी लाल बटन दबाकर वापस आने का रास्ता बन्द?"

"नहीं-नहीं, बन्द तो नहीं..." माँझी ने ढाढ़स बँधाया, "पर अनिश्चित और खतरनाक ज़रूर होगा, क्योंकि अगर हम मिन्नी को लाल बटन दबाने का सन्देश दें भी, तब भी उसे समझकर उस पर अमल करने में उसे कुछ समय तो ज़रूर लगेगा। जिस समय वह लाल बटन दबाएगी, उस समय रॉकेट जिस भी बिन्दु पर होगा, वो वहीं से वापसी का कार्यक्रम शुरू करेगा।"

"यानी वापसी मार्ग पर खतरों का हिसाब लगाने के लिए, एक सीधी रेखा की बजाय, हमें एक चौड़े पट्टे को नज़र में रखना होगा। यह तो टेढ़ी खीर है!" डॉ. मंडेला बोले।

"हाँ भी, और नहीं भी।" शर्माजी ने कहा, "क्योंकि लाल बटन दबने के बाद, रॉकेट की कम्प्यूटर प्रणाली को यही निर्देश मिलना था कि वह छोटे-से-छोटे रास्ते से चलकर, अपने मूल वापसी-मार्ग से मिले। उसके बाद का सारा काम मूल नियंत्रण व्यवस्था सम्भाल लेगी; मानो रॉकेट अपनी सारी यात्रा पूरी कर मूल वापसी-मार्ग पर आ रहा हो।"

"लेकिन आप उस बीच वाले हिस्से का क्या करेंगे जहाँ रॉकेट सौर-मण्डल से बाहर जाकर, सौर-मण्डल में वापस आने तक रहेगा?" डॉ. मंडेला का सन्देह बरकरार था।

"खतरा तो है, पर दूसरा चारा क्या है?" डॉ. राममूर्ति ने कहा, "हमारे हाथ बँधे हुए हैं। मिन्नी या तो लाल बटन दबाए, या नीला। अगर वह नीला बटन दबाती है, तो रॉकेट पहले कहे के मुताबिक अपने दूसरे चरण की यात्रा शुरू करेगा। उसमें खतरा यह है कि हो सकता है मिन्नी वापस न आ पाए, क्योंकि पहली बार कोई रॉकेट, सौर-मण्डल से बाहर, इतनी दूर जा रहा है।" उन्होंने एक उचटती निगाह चौधरी साहब के चेहरे पर डाली।

"ठीक है, पर परिचित रास्ते के खतरे और छोटे पर अपरिचित रास्ते के खतरे में काफी अन्तर है। क्या आपने उसका हिसाब लगाया है? अगर नहीं, तो क्या हम रॉकेट को मूल मार्ग पर जाने दें?" मंडेला अपनी बात पर दृढ़ थे।

"इसका एक उपाय मैंने सोचा है..." माँझी ने कहा, "अगर वह कारगर होता है तो रॉकेट एक निश्चित बिन्दु से वापस आ सकता है। हमारी वर्तमान व्यवस्था के हिसाब से, रॉकेट की यात्रा का पहला चरण जहाँ खत्म होगा, उसी बिन्दु से दूसरे चरण की यात्रा शुरू होगी। हालाँकि, यह बिन्दु सौर-मण्डल की कक्षा से कई लाख किलोमीटर परे है। फिलहाल, हमें उसकी सही स्थिति मालूम है। अगर

हम किसी तरह रॉकेट को निर्देश दे पाएँ कि आपातकालीन वापसी का सफर उसी बिन्दु से शुरू करे, जहाँ से दूसरे चरण की शुरुआत होनी थी, तो एक बड़ी समस्या मिटेगी। हम वापसी के मार्ग का सही हिसाब लगा सकेंगे।"

"क्या आपने उसकी गणना की है?" डॉ. राममूर्ति ने पूछा, "और खतरे की सम्भावना क्या है?"

"यह गणना मैंने खुद की है!" चौधरी साहब बोले, "और इसमें खतरे की सम्भावना पुराने विकल्प से कोई नौ सौ गुना कम बनती है। कम-से-कम ब्रह्माण्ड के बारे में हमें अब तक जितनी जानकारी है, उससे तो यही तय होता है। लेकिन इसके लिए आवश्यक होगा कि मिन्नी पहले नीला बटन दबाए, ताकि दूसरे चरण का रास्ता निर्धारित करने का काम शुरू हो जाए, और उसके तुरन्त बाद वह लाल बटन दबाए, ताकि दूसरे चरण की नियंत्रण व्यवस्था को वापसी का निर्देश मिले।"

"पर प्रश्न उठता है कि यह होगा कैसे? और अगर दूसरे चरण की नियंत्रण व्यवस्था ने यह निर्देश स्वीकार कर भी लिया, तो रॉकेट सौर-मण्डल के बाहर से अपने मूल वापसी-मार्ग पर पहुँचेगा कैसे?" एक वैज्ञानिक ने पूछा।

"पहुँचना सम्भव है, क्योंकि अभी रॉकेट की पूरी ईंधन-शक्ति बरकरार है। सन्देह सिर्फ मार्ग परिवर्तन के निर्देश को मानने का है, क्योंकि हमने दूसरे चरण में इसकी कोई गुंजाइश नहीं रखी थी। पर आशा की एक किरण है कि पहले चरण का अन्तिम बिन्दु ही दूसरे चरण का शुरुआती बिन्दु है। केवल और केवल यही एक बिन्दु दोनों निर्देशों में कॉमन है। अत: जब कम्प्यूटर प्रणाली को दोनों निर्देश एक ही साथ मिलेंगे, तो आपात-वापसी की शुरुआत उसी बिन्दु से होगी," माँझी ने बात पूरी की।

इस दूर की कड़ी ने सभी को प्रभावित किया। पर डॉ. जगत ने मीटिंग खत्म करते-करते सबके मन की बात कह डाली, "दोस्तो, हम आशा रखेंगे कि माँझी की तरकीब कामयाब हो। उसके लिए यह ज़रूरी है कि मिन्नी हमसे सम्पर्क बना पाए। यह भी कि हमारे नियंत्रण-कमरे में, मिन्नी के लिए, हर जगह बड़े-बड़े और स्पष्ट अक्षरों व सरल भाषा में निर्देश लिख दिए जाएँ, ताकि अगर कुछ ही क्षणों के बाद सम्पर्क टूट भी जाए, तो उसे साफ-साफ पता रहना चाहिए कि उसे क्या करना है, और उसका ढाढ़स बना रहे। लेकिन साथ ही, खासकर चौधरी साहब से, यही कहूँगा कि हमें इस बात के लिए भी तैयार रहना चाहिए कि सारे प्रयत्नों के बावजूद रॉकेट अपने मूल-मार्ग पर चला जाए। उस परिस्थिति में मिन्नी से हमारा सम्पर्क कुछ ही दिनों में टूट जाएगा। इस बीच उसकी न्यूनतम

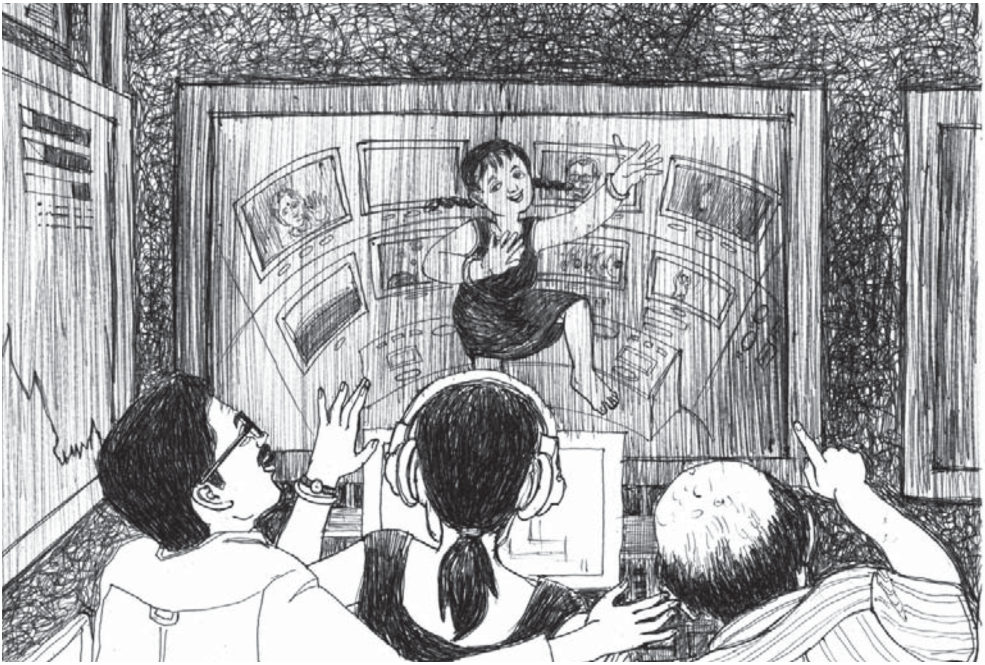

ट्रेनिंग की व्यवस्था भी हमें करनी है।" उन्होंने कृष्णन की ओर देखा जो सहमती से सर हिला चुके थे।

"हमारी ओर से पूरी तैयारी है!"

* * *

मिन्नी दूसरी बार रो पड़ी। पर ये खुशी के आँसू थे। उसने जल्दी-जल्दी अपने को संयत कर स्क्रीन पर दिख रहे नियंत्रण-कक्ष में रखे सन्देश पढ़े।

'मिन्नी, घबराना मत! लाल डिब्बे के सहारे हम तुम्हें देख पाते हैं।

इससे पहले कि सम्पर्क कट जाए, नीचे बताए ज़रूरी काम करो। उसके बाद हर आधे घण्टे तक हमसे बारी-बारी से सम्पर्क करो, ताकि सन्देशों का आदान-प्रदान हो सके।'

और न जाने कितने सन्देश थे कमरे के कोने में। मिन्नी ने जल्दी-जल्दी सारे ज़रूरी काम निपटाए, और लाल डिबिया को टीवी से निकालकर फिर से हाथों में ले लिया।

"ज्ञान कभी भी व्यर्थ नहीं जाता।" स्काउट मास्टर के शब्द उसके मन में कौंध गए। नियंत्रण-कक्ष में भी हर कोई मिन्नी का लोहा मान गया जब उसने गर्ल्स-गाइड की ट्रेनिंग के दौरान सीखी हुई संकेत भाषा में बातचीत शुरू की। बेचारी के पास न पेंसिल थी, न कागज़-कलम। भाग-दौड़ तो नियंत्रण-कक्ष में मची, जहाँ यह संकेत भाषा किसी को मालूम नहीं थी। सौभाग्य से सारा सम्प्रेषण रिकॉर्ड हो रहा था।

मिन्नी की गर्ल्स-गाइड टीचर, बानी दीदी को जब नियंत्रण-कक्ष में लाया गया, तो वे गर्व से फूली नहीं समा रही थीं। इतनी बड़ी घटना में इतनी अहम भूमिका।

अचम्भा मिन्नी को भी हुआ, जब आधे घण्टे बाद स्क्रीन पर पहला चेहरा नज़र आया – बानी दीदी का। पहली बार उसे धरती पर हो रहे सारे काण्ड का पता चला। परिस्थिति की गम्भीरता भी वह अब समझ रही थी। लेकिन उस आधे घण्टे की बातचीत में उसका पहला सन्देश था कि मैं कम-से-कम पाँच मिनट नाचूँगी। उसके बाद ही कोई प्रसारण होगा। और पाँच मिनट वह वाकई पूरे कमरे में चक्करघिन्नी की तरह नाचती फिरी।

और नाचते फिरे शर्माजी, जब माँझी के कहे अनुसार रॉकेट दूसरे चरण के प्राथमिक बिन्दु से वापसी के लिए मुड़ता नज़र आया। उन्होंने माँझी को गले लगाया और साथ खींच ले जाकर घण्टा-भर टेनिस खेलते रहे।

इन सबसे अलग, ऊपरी भाव से निर्विकार – कृष्णन और बानी दी – जुटे रहे मिन्नी की ट्रेनिंग में। न जाने कब रॉकेट से सम्पर्क टूट जाए। फिर सौर-मण्डल में वापस आने तक सम्पर्क की कोई गुंजाइश नहीं थी।

सम्पर्क आखिरकार टूटा। पर उससे पहले, मिन्नी ने कृष्णन अंकल की इस नसीहत की गाँठ बाँध ली थी – "बेटा, सम्पर्क कब स्थापित हो जाए, कहा नहीं जा सकता। इसलिए हर आधे घण्टे में सम्पर्क बनाने की कोशिश चालू रखना।" वैसे भी उसे आशा बँधाने का और कोई साधन नहीं था।

माँझी भी इसी वजह से दिन-रात नियंत्रण-कमरे में जुटी रहती थीं। रॉकेट की वापसी की शुरुआत ने उन्हें रातों-रात 'हीरो' बना दिया था, फिर भी उन्हें पता था कि रॉकेट के मार्ग को ट्रैक करते रहना कितना आवश्यक है। वे, शर्माजी और चौधरी अक्सर नियंत्रण-कमरे में ही देखे जाते थे। लेकिन आम तौर पर उल्लासित रहने वाली माँझी के चेहरे पर अब चिन्ता की रेखाएँ गहराने लगी थीं। पर इसकी जानकारी न चौधरी साहब को हो पाई, न शर्माजी को। रॉकेट अपने मूल वापसी-मार्ग से जुड़ने के लिए बढ़ता जा रहा था, और रॉकेट का रास्ता भी अब तक सही था। मगर उस रास्ते पर कायम रहने के लिए ईंधन की खपत धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी, जिसने माँझी के मन में आशंकाएँ और कुशंकाएँ पैदा कर दी थीं। आखिरकार, उन्होंने अपने सहयोगियों से एक बार अपने डर की चर्चा कर ही डाली।

"भई, रॉकेट तो मूल वापसी-मार्ग से जुड़ने के लिए सबसे छोटे रास्ते पर ही तो चल रहा है। फिर तुम्हारी

समस्या क्या है?” शर्माजी को बात पल्ले नहीं पड़ रही थी।

“शर्माजी, समस्या यह है कि रॉकेट के ईंधन की खपत जिस रफ्तार से बढ़ रही है, वह मेरे लिए चिन्ता का विषय है। न सिर्फ खपत बढ़ रही है, बल्कि खपत की दर भी नियमित रूप से बढ़ रही है। इसका मतलब है कि उस ‘सबसे छोटे मार्ग’ पर टिके रहने के लिए रॉकेट की ईंधन की ज़रूरत बढ़ती जा रही है। अगर यह बढ़त अनियमित या अस्थायी होती, तो हम उसे नज़रअन्दाज़ कर भी देते, पर नियमित बढ़त को नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता।”

“तुम कहना क्या चाह रही हो?”

“शर्माजी, रॉकेट की कम्प्यूटर चालित प्रणाली में हमने ब्रह्माण्ड के बारे में वही जानकारी भरी है जो हमारे पास है, और उसी आधार पर उसने ‘सबसे छोटे’ रास्ते का हिसाब लगाया है। अब चूँकि उस कम्प्यूटर को दिए गए निर्देशों में वापसी-मार्ग से जुड़ने के लिए सबसे छोटे रास्ते से आने का हुक्म अटल है, रॉकेट उसी रास्ते से आ रहा है, चाहे ईंधन जितना भी खर्च हो।”

“पर रॉकेट के पास ईंधन की पर्याप्त मात्रा है तो सही। इसलिए खपत अगर अधिक भी हो तो इतनी चिन्ता की बात होनी नहीं चाहिए।”

“वह ठीक है, पर मेरी चिन्ता खपत बढ़ने से नहीं है, बल्कि उसके पीछे की वजह से है। और मुझे डर है कि जिस रास्ते पर रॉकेट अपनी जानकारी और गणना से चल रहा है, वह सबसे छोटा रास्ता नहीं है।”

“लेकिन मैंने ये गणनाएँ खुद चेक की हैं।” चौधरी साहब कहने लगे, “हमारे हिसाब से भी यही सबसे छोटा रास्ता नज़र आता है। तुम तो जानती ही हो कि न्यूनतम अथवा बृहत्तम रास्ता आसपास के सारे पदार्थ-पिण्डों के गुरुत्वाकर्षण बल को हिसाब में लेकर तय होता है। और हमने अपनी गणनाओं में आकाश में फैली धूल से लेकर, तारों तक, सारे पिण्डों को शामिल किया है।”

“वह मुझे पता है, चौधरीजी।” माँझी ने चौधरी साहब से कहा, “पर जैसे आपने ही कहा कि यह गणना आकाशीय पिण्डों के बारे में हमारी अब तक की जानकारी के आधार पर ही हुई है, और उसी हिसाब से न्यूनतम रास्ते और उस पर कायम रहने के लिए ईंधन-खपत का हिसाब भी। पर सच्चाई यह है कि ईंधन की वास्तविक खपत, गणना के हिसाब से ज़्यादा है।”

“अरे नहीं!” चौधरी साहब को बात पकड़ते देर नहीं लगी, “तुम्हारा कहना है कि उस क्षेत्र में कोई अन्य पिण्ड भी है जिसका गुरुत्वाकर्षण बल रॉकेट को इस ‘न्यूनतम’ रास्ते से हटाकर, किसी अलग रास्ते पर ले जाने की कोशिश कर रहा है?”

"हाँ, और उस गुरुत्वाकर्षण शक्ति के प्रतिरोध के लिए रॉकेट ईंधन की अधिक खपत कर रहा है, ताकि वह अपने निर्धारित 'न्यूनतम' रास्ते पर चले, जबकि..."

"जबकि सही न्यूनतम रास्ता कुछ और है।" चौधरी साहब ने बात पूरी की, "तो ठीक है, चिन्ता करने की बजाय हम उस पिण्ड को खोज निकालें, तो वह बेहतर होगा। मैं ईंधन के बारे में तुम्हारी चिन्ता समझता हूँ, पर हमारे रॉकेट में तो पर्याप्त ईंधन है। बेचारे को 'प्रॉक्सिमा सेंटॉरी' से आधी दूरी तक जाना था, पहले ही वापस लौट रहा है।" उनके मुस्कुराते चेहरे को देख माँझी को साहस नहीं हुआ कि अपनी कुशंका व्यक्त करें। उन्होंने अपने निरीक्षण को कुछ दिन और जारी रखना बेहतर समझा।

दुनियाभर के टेलिस्कोपों को सन्देश भेजे गए कि आकाश के उस क्षेत्र की विस्तार से छानबीन की जाए। उस अज्ञात आकाशीय पिण्ड की खोज के लिए, विश्व के चोटी के दो-तीन आकाश वैज्ञानिकों को अत्यन्त ज़रूरी मशवरों के लिए, विक्रम अनुसन्धान केन्द्र बुला लिया गया, और उनके साथ डॉ. अभ्यंकर भी वहाँ आ जुटे। अज्ञात पिण्ड न मिलना था, और न मिला। ईंधन की खपत भी नियमित और चिन्ताजनक रूप से बढ़ रही थी और खपत की दर भी।

माँझी का डर और गहराता गया। उन्होंने अन्य आकाश वैज्ञानिकों के साथ बैठकर, कुछ दिनों की जी-तोड़ मेहनत के बाद, उस अज्ञात पिण्ड की सम्भावित स्थिति का पता लगा लिया। पर वहाँ कोई पिण्ड नहीं था। आखिरकार, डॉ. अभ्यंकर ने उनके डर की पुष्टि कर ही दी।

"माँझी, वाकई वहाँ एक कृष्ण-विवर यानी ब्लैक होल मौजूद है।" सौर-मण्डल के इतने करीब कृष्ण-विवर! इससे ज़्यादा सनसनीखेज़ खबर पिछले दो-तीन दशकों में नहीं मिली थी। पूरे विश्व के आकाश वैज्ञानिकों में एक खलबली-सी मच गई। विक्रम अनुसन्धान केन्द्र उनके लिए एक रहस्य का केन्द्र बन गया। माँझी की दूसरी आशंका की पुष्टी डॉ. जगत और डॉ. मेहता ने की। वैज्ञानिकों की एक अन्य ज़रूरी तथा गोपनीय बैठक में उन्होंने बताया, "जैसा कि आप सबको पता है, कृष्ण-विवर यानी ब्लैक होल, पदार्थ की सबसे सघन अवस्था है। इसका निर्माण सुपरनोवा के आकुंचन से होता है। इसमें गुरुत्वाकर्षण के बल से सारी पदार्थ मात्रा सिमटती जाती है और सघन से सघनतर होती जाती है। इसके साथ ही, ब्लैक होल के अन्दर गुरुत्वाकर्षण की शक्ति तीव्र से तीव्रतर होती जाती है। सघनता इतनी अधिक होती है कि इसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति की लपेट में आने से प्रकाश तक नहीं बच पाता है। यही वजह है कि ब्रह्माण्ड में मौजूद इन

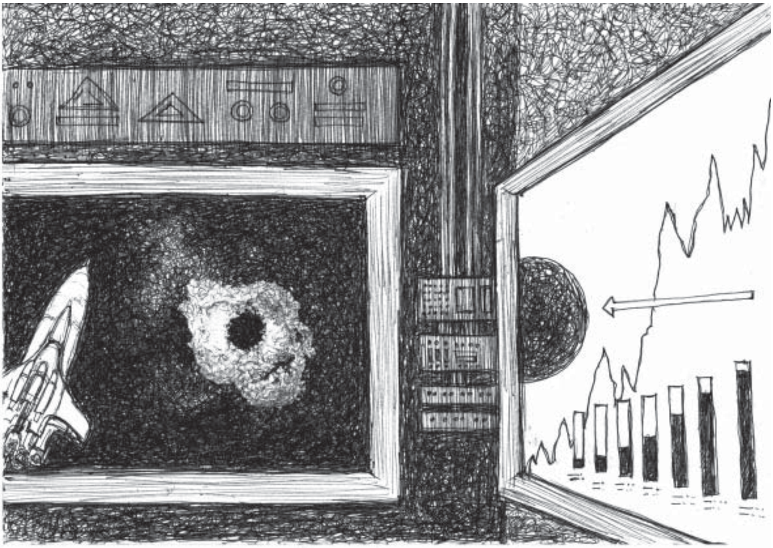

स्याह-काले गड्ढों को कोई देख नहीं पाता, क्योंकि उस पर छोड़ा गया प्रकाश उसी में खिंचकर विलीन हो जाएगा और बाहर नहीं निकल सकेगा।"

"हमारी गणनाओं से पता चलता है कि यह कृष्ण-विवर अब तक के ज्ञात विवरों में सबसे छोटा है। फिर भी, इसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति काफी अधिक है। हमारा रॉकेट, इसके खिंचाव से बचने के लिए, ईंधन को अधिकाधिक गति से खर्च कर रहा है, पर दुर्भाग्य से वह उसी दिशा में बढ़ रहा है जहाँ उस कृष्ण-विवर की गुरुत्वाकर्षण शक्ति अधिक होती जा रही है।"

सबके चेहरों पर गम्भीरता छाई हुई थी। यह सबको पता था कि जैसे-जैसे दूरी घटती जाती है, वैसे-वैसे गुरुत्वाकर्षण-शक्ति की तीव्रता बढ़ती जाती है, और वह भी वर्ग के हिसाब से। यानी दूरी आधी हो, तो शक्ति चौगुनी। दूरी एक तिहाई हो, तो शक्ति नौ गुनी हो जाती है।

"और ज़ाहिर है कि ईंधन की खपत उसी रफ्तार से बढ़ेगी।" डॉ. जगत ने कहा, "लेकिन एक समय ऐसा आएगा जब ईंधन की खपत अपनी चरम सीमा तक पहुँच जाएगी। उसके बाद रॉकेट अपने इस 'सबसे छोटे' रास्ते से हटकर ब्लैक होल की ओर खिंचने लगेगा।"

"और उसके बाद कुछ भी हो सकता है।" डॉ. मेहता ने कहा,

"क्योंकि रॉकेट जिस दिशा और वेग से कृष्ण-विवर की ओर बढ़ेगा, उस पर यह निर्भर करेगा कि उसकी कक्षा क्या होगी। वह सीधा विवर में विलीन हो सकता है या उसके चारों तरफ वृत्ताकार या अण्डाकार कक्षा में आजीवन भटक सकता है। यह भी हो सकता है कि वह एक पेराबोला के आकार की कक्षा में चला जाए, या फिर एक हायपरबोला के आकार की कक्षा में, और फिर अनन्त में हमेशा के लिए विलीन हो जाए।"

"और हम हाथ पर हाथ धरे रॉकेट के रास्ते को देखने के अलावा कुछ नहीं कर सकते?" उद्विग्न होकर शर्माजी ने कहा।

"शायद नहीं।" डॉ. जगत ने जवाब दिया। उस जवाब में एक विषाद की लकीर साफ-साफ झलक रही थी।

ऐसी निराशाजनक स्थिति में भी चौधरी साहब ने हिम्मत नहीं हारी थी। उन्होंने पूछा, "इस बात की कितनी सम्भावना है कि रॉकेट की ये कक्षाएँ मूल वापसी-मार्ग को छुएँ?"

माँझी की आँखें चमक उठीं, "चौधरीजी, मैं आपकी बात समझ रही हूँ। इस सम्भावना का हिसाब मैं आपको शाम तक दे दूँगी।"

और सम्भावनाएँ उतनी निराशा-जनक भी नहीं निकलीं, जितना लोगों को डर था। माँझी को गणना से पता चला कि दीर्घवृत्ताकार, पेराबोला और हायपरबोला आकार, तीनों कक्षाएँ वापसी मार्ग को छुएँगी। यह भी, कि उस परिस्थिति में भी रॉकेट में कुछ ईंधन बचा रहेगा। पर ईंधन का सही अनुमान पता लगने में कुछ और देर थी।

रॉकेट के इंजन की खपत अपनी चरम सीमा तक पहुँच गई थी। उसके बाद वह अपने निर्धारित रास्ते से हट गया और ब्लैक होल की ओर खिसकने लगा। माँझी उसका मार्ग निहारने और अपनी गणनाओं को अन्तिम रूप देने में अपलक जुटी रहीं। सबके सामने एक ही प्रश्न था, "रॉकेट की कक्षा क्या होगी?"

शर्माजी फिर नाचने लगे जब यह पता चला कि रॉकेट ब्लैक होल में विलीन नहीं होगा। और एक बार फिर माँझी के साथ टेनिस खेलने दौड़े जब वृत्ताकार कक्षा का खतरा टला। अब सवाल रहा कि रॉकेट की कक्षा का ऊँट कौन-सी करवट बैठेगा।

और फिर उस सुबह को विक्रमनगर वाले कभी नहीं भूले, जब आँखों में आँसू और पीठ पर लड्डुओं का झोला लिए शर्माजी ने घर-घर जाकर लड्डू बाँटे, और फिर अपने घर में अपने हाथों से पैराबोला के आकार और समीकरण का एक शिल्प बनाया। चौधरी साहब की खुशी का भी ठिकाना नहीं रहा। माँझी की गणनाओं ने स्पष्ट रूप से दिखाया था कि रॉकेट न सिर्फ पैराबोला आकार की कक्षा में ब्लैक होल के पास से गुज़रेगा, बल्कि उस कक्षा का कोई

एक लाख किलोमीटर का हिस्सा रॉकेट के मूल वापसी-मार्ग को बिलकुल छूता हुआ समानान्तर गुज़रेगा। इतना समय रॉकेट की नियंत्रण व्यवस्था के लिए काफी था। अपने मूल वापसी-मार्ग पर टिके रहने के लिए ईंधन की जो अनावश्यक खपत हुई, उसकी क्षतिपूर्ति ब्लैक होल की गुरुत्वाकर्षण शक्ति द्वारा रॉकेट को मिले हुए त्वरण के ज़रिए हो जाएगी।

"ऐसा लग रहा है जैसे ब्रह्माण्ड के नियमों से बनी सभी सम्भावनाएँ हमारे लिए अनुकूल हो गईं। वापसी की इस रफ्तार का हम सपने में भी अनुमान नहीं कर पाते।"

* * *

सपने में अनुमान तो मिन्नी ने भी नहीं किया था। ब्लैक होल के गुरुत्वाकर्षण की चपेट में आए रॉकेट की गति जिस रफ्तार से बढ़ी, मिन्नी को लगा कि वह अन्तरकक्ष के फर्श से चिपकी ही रह जाएगी। क्या हो रहा था, यह जानने का उसके पास कोई साधन नहीं था। उसे लगा कि उसके सर की नसें फट जाएँगी। उसने सर को दोनों हाथों से दबा लिया और फर्श पर बैठ गई।

उसे पता ही नहीं चला, उसकी बेहोशी कितनी देर तक बनी रही। जब होश आया तो उसे बेहद कमज़ोरी महसूस हो रही थी और भूख भी। लेकिन इन सबके बावजूद उसका ध्यान खींचा टीवी की स्क्रीन ने, जहाँ नियंत्रण-कमरा साफ नज़र आ रहा था और साथ ही, वहाँ बैठे उसके पापा।

इस बार मिन्नी रोई नहीं; उठकर उसने पहले पेट में कुछ गोलियाँ डालीं, और धीरे-धीरे लाल डिब्बी को टीवी से निकालकर अपने हाथों में लिया।

इस बार रो पड़े चौधरी साहब! संकट के पूरे दौर में धैर्य और जीवट का जो बाँध उन्होंने अपने चारों ओर बाँध रखा था, संकट टलने के बाद पहली बार मिन्नी का चेहरा देखकर ढह गया। धीरज के कन्धों पर हाथ रख, वे कमरे के बाहर चले गए। नियंत्रण-कक्ष में कोई भी ऐसा नहीं था जिसकी आँखों में आँसू न आए हों।

रॉकेट सौर-मण्डल के दायरे में पहुँच चुका था। अब काम महज़ प्रतीक्षा का था। नियंत्रण-कमरे में न माँझी बैठ पाईं, न शर्माजी, न चौधरी साहब। वे तीनों बैठे रहे कन्याकुमारी के समुद्र तट पर, जहाँ मिन्नी को वापस आना था।

सागर तट पर जब पनडुब्बी मिन्नी को लेकर पहुँची, तो जैसे दो समुद्र एक-दूसरे के आमने-सामने खड़े थे – एक जल सागर और दूसरा जन सागर। कन्याकुमारी की वह भीड़ 'न भूतो न भविष्यति' भीड़ थी।

पापा से लिपटी हुई मिन्नी ने दीपू को देखते ही पहला प्रश्न दागा, "दीपू मुझसे कितना बड़ा हो गया है?"

मुक्का दिखाते हुए दीपू ने जवाब दिया, "पूरा एक साल!"

सौर-मण्डल के इस निकटतम ब्लैक होल का नामकरण मिन्नी के नाम पर किया गया। सारी दुनिया में उसके नाम की चर्चा थी। प्रशंसकों के पत्र, इंटरव्युओं का सिलसिला, उपहारों की बौछार और न जाने क्या-क्या... आकाश वैज्ञानिकों की अन्तरराष्ट्रीय संस्था ने उसे 'वैलेंटिना तेरेश्कोवा' पुरस्कार से सम्मानित किया।

वापसी को कोई एक साल बीत गया था। मिन्नी अब ज़ोर-शोर से अपनी पढ़ाई में लग गई थी। परीक्षाएँ पास आ रही थीं। बरामदे में बैठी वह ज़ोर-ज़ोर-से भूगोल रट रही थी।

तभी दीपू आया, "ऐ मिन्नी की बच्ची, चल कंचे खेलने!"

"देखता नहीं, मैं पढ़ रही हूँ? मुझे नहीं चलना।"

"ऐ अन्तरिक्षवाली, ज़्यादा इतरा मत! चल खेलने!" दीपक ने उसकी चोटी खींची।

मिन्नी ने आव देखा न ताव, एक दाँव दीपक की पीठ पर जमा दिया। आदत के मारे दीपक ने रसोईघर की ओर कूच किया।

"मिन्नी!" सामने माँ खड़ी थीं, दाहिना हाथ आटे से सना। थोड़ा आटा बालों पर भी लग गया था और बाएँ हाथ में... फिर वही बेलन! "क्यों झगड़ा कर रही है दीपू के साथ?"

"मैंने क्या किया? उलटा वो ही मुझे तंग कर रहा था। मैं भूगोल याद कर रही थी तो आकर बोला 'खेलने चलो'। मैंने मना किया तो चोटी खींचने लगा मेरी।"

"और तुमने उसे थप्पड़ मार दिया?" माँ बोलीं, "खेल लेती बड़े भाई के साथ दो मिनट तो क्या बिगड़ता था? और इत्ती बड़ी हो गई है, शर्म नहीं आती बड़े भाई पर हाथ उठाते हुए? एँ!"

बड़ा भाई! मिन्नी ने सर पर हाथ दे मारा। सामने देखा तो धीरज भैया खड़े थे। रुआँसी आवाज़ में उसने कहा, "भैया इस बार दीपू को भेज दो रॉकेट में...।"

(1993)

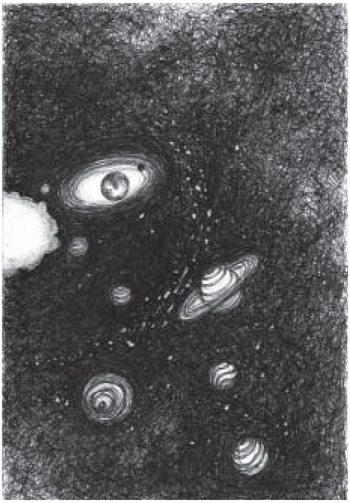

सतीश बलराम अग्निहोत्री: भारतीय प्रशासनिक सेवा के भूतपूर्व अधिकारी और अब आई.आई.टी. मुम्बई में प्राध्यापक। जन्म रत्नागिरि ज़िले के देवरूख गाँव में हुआ। बचपन बिहार के दरभंगा शहर में गुज़रा जहाँ स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई की। इसके बाद आई.आई.टी. मुम्बई से फिज़िक्स और फिर पर्यावरण विज्ञान में एम.टेक. किया। 1980 से भारतीय प्रशासनिक सेवा में ओडिशा राज्य एवं केन्द्र सरकार में कई विशिष्ट पदों पर 35 साल सेवारत रहे। हिन्दी में विज्ञान कहानियाँ और लेख लिखने की शुरुआत तब की जानी-मानी पत्रिका 'धर्मयुग' से हुई। व्यंग्य रचनाएँ भी लिखते रहते हैं। सम्पर्क - satishagnihotri1955.in

सभी चित्र: पूलता ब्लैकडॉट: एक कलाकार हैं। वे फाउंड ऑब्जेक्ट्स, रोज़मर्रा के सामान, समय की रैखिकता, स्पेस, यादों और निजी अनुभवों के साथ काम करते हैं। सम्पर्क - pooltahblackdot@gmail.com